वीर विलास

सम्पादक-डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैयां'

बरसैंया जी प्राचीन पांडुलिपियों को अपनी 'एक्सरे' दृष्टि से देखने में पटु हैं। वे पांडु-लिपियों को सभी कोणों से देखते हैं, और कविता के इतिहास में उसका स्थान सुनिश्चित करते हैं। जगनिक जैसे कृती कवि की शैली का परित्याग कर अपने लिए नई शैली का आविष्कार कर अपने आप में एक उपलब्धि है।

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया ने 'वीर-विलास' नामक एक खंडकाव्य को ऐतिहासिक शास्त्रीय, भाषा वैज्ञानिक आदि कई कसौटियों पर कसा है। यह ग्रंथ अपने आप में तो महत्त्वपूर्ण है ही, चंदबरदाई और जगनिक जैसे कवियों को समझने में भी सहायक है। हिन्दी के वीरकाव्य की परम्परा 'वीरविलास' के प्रकाशन से समृद्ध हुई है और डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया' एक शोधक, समीक्षक और संपादक के रूप में इस ग्रंथ के माध्यम से अपनी पूर्व अर्जित प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने में सफल हुए हैं।

वीर विलास

(ज्ञानी कवि)

सम्पादक

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंयां'

वाणी प्रकाशन
4697/5, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-2
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 1992
© लेखकाधीन
मूल्य : 75.00

अशोक कंपोजिंग एजेंसी द्वारा
आजाद प्रिंटर्स, दिल्ली-110031
में मुद्रित

VEER VILAS (Gyani Kavi)
Edited By
Dr. Gangaprasad Gupt Barsaiyan

पूर्वकथन

रामचरित मानस और लोककाव्य आल्हा बाल्यावस्था से ही मेरे प्रिय काव्य रहे हैं। जिस भौंरीं (जिला बाँदा) गाँव में मेरा जन्म हुआ वह बाल्मीकि आश्रम (लालापुर), चित्रकूट और राजापुर (महाकवि तुलसीदास का जन्म-स्थान) से जुड़ा हुआ है—बल्कि इनके बीच में स्थिति है। रामचरित मानस का पारायण मेरे परिवार से ही नहीं, अपितु पूरे गाँव में प्राय: व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से होता रहा है। हर सुख-दुख में रामचरित मानस का आश्रय लिया जाता। महीनों रामलीला होती। परिणामतः रामचरित मानस के प्रति मेरी आस्था सर्वाधिक और गहरी हुई है।

इसी प्रकार बरसात आते ही गाँव की चौपालों में महीनों दिन-रात आल्हा-गायन चलता। दूर-दूर से अल्हैत आते। उनका स्वागत-सत्कार होता। शाम होते ही सैकड़ों लोग एकत्र होते और रात-रात भर ढोलक-मजीरे के साथ आल्हा गायकी का आनन्द लेते। बीच-बीच में हुंकार और ललकारें भी सुनाई पड़ती। लोग जोश में भरकर मस्त हो जाते। कई लोगों को आल्हा कंठाग्र था। मस्ती थी। आनन्द था। बचपन से मैंने रात-रात भर जागकर आल्हा का आनन्द लिया है। कई लड़ाइयाँ स्वयं कई बार पढ़ी हैं। आल्हा में अपने में समरस कर लेने की अद्‌भुत शक्ति है।

विद्यार्थीकाल से ही आल्हा पर शोध करने की इच्छा थी, परन्तु वह पूरी न हुई। मेरी मान्यता है कि आल्हा बहुत महत्त्वपूर्ण लोककाव्य है जिसमें जीवन और इतिहास के अनेक मूल्यवान तत्त्व समाहित हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। भले ही उसमें क्षेपक और अतिशयोक्तियों की मात्रा अधिक हों, परन्तु उसे अस्वीकारना इतिहास और जीवन-साहित्य के प्रति बहुत बड़ा अन्याय होगा। उसका प्रामाणिक सम्पादन और शोध-परक परीक्षण तथा मूल्यांकन अत्यावश्यक है। इसके लिए लम्बी साधना अपेक्षित है। बुन्देलखण्ड मेरी जन्मभूमि तथा कर्मभूमि है। इसके प्रति अनुराग और आस्था स्वाभाविक ही है। मैं निरन्तर प्रयत्नशील हूँ। 'वीर विलास' का सम्पादन और प्रकाशन उसी दिशा में एक चरण मात्र है।

आज से लगभग 5-6 वर्ष पूर्व मेरे पुराने मित्र और सहकर्मी डॉ० रामविशाल चंदौसिया ने मुझे 'वीर विलास' की पांडुलिपि इस शर्त पर दी थी कि मैं उसे प्रकाशित कराऊँगा। न जाने किस प्रेरणा से मैंने यह शर्त स्वीकार कर पांडुलिपि प्राप्त कर ली। उस पर निरन्तर अनुसंधान चलता रहा। प्रकाशन के प्रयास भी किये। अनुसंधान के दौरान ही पता चला कि यह आल्हा सम्बन्धी उपलब्ध प्राचीनतम प्रति है और इसकी कुछ ही प्रतियाँ उपलब्ध हैं। बहुत प्रयास करने पर भी 'वीर विलास' के रचनाकार कवि ज्ञानी जी के जीवन का विवरण मुझे नहीं मिल सका। पांडुलिपि में निवास स्थान का उल्लेख है। दूसरी प्रतियाँ मुझे देखने को नहीं मिल सकीं। अभी तक यह सर्वथा अज्ञात और अप्रकाशित पांडुलिपि है। विद्वानों एवं जानकारों से सम्पर्क किया, किन्तु विशेष सहायता न मिली। सूत्र सुलझने की वजाय उलझते ही जा रहे थे। तभी मेरे पुराने साथी श्री उदयशंकर दुबे व डा० किशोरी लाल जी ने पूरे सहयोग का वचन दिया। मुझे शक्ति मिली। कार्य प्रारम्भ हुआ। मैंने तो प्रारम्भिक-कार्य किया परन्तु उसे इस रूप में पूर्णता प्रदान की श्री उदयशंकर दुबे व डा० किशोरी लाल जी ने। यदि उन्होंने इतना सहयोग न किया होता तो इस प्राचीन पांडुलिपि का प्रकाशन अभी सम्भव न हो पाता। अतएव पांडुलिपि प्रदान करने के लिए मैं डा० रामविशाल चंसौरिया का तथा सम्पादन में सहयोग देने के लिए श्री उदयशंकर दुबे व डा० किशोरी लाल जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना अपना कर्तव्य मानता हूँ। उनके सहयोग के कारण ही इसका सम्पादन व प्रकाशन सम्भव हुआ।

प्रकाशन का कार्य बड़ा कठिन है। सम्पादन की कठिनाइयाँ अपनी जगह हैं, उनकी चर्चा करना व्यर्थ है। सम्पादन के बाद प्रकाशन कार्य भी बड़ा दुष्कर है। इस अर्थयुग में साहित्य गौण और अर्थ प्रधान हो गया है। अतः उस तुला पर रखकर ही अधिकांश प्रकाशक प्रकाशन के लिए तैयार होते हैं। वाणी प्रकाशन, दिल्ली के भाई अरुण कुमार माहेश्वरी ने साहित्य की अनदेखी नहीं की, तभी वे इस 'वीर विलास' के प्रकाशनार्थ सहमत हुए। इसमें उनकी सहभागिता है। अन्यथा इतनी जल्दी प्रकाशन न हो पाता। वे धन्यवाद के अधिकारी हैं।

श्री शिवनारायण खरे, अध्यक्ष, स्वामी प्रणवानन्द जनकल्याण ट्रस्ट, छतरपुर ने दो हजार रुपयों की सहयोग राशि प्रदान कर मार्ग प्रशस्त किया। मैं स्वामी प्रणवानन्द जनकल्याण ट्रस्ट के प्रति आभारी हूँ। मेरे कई मित्रों ने तथा परिवार जनों (विशेषकर चि० अभिलाष और बेटी रीता) ने इसे व्यवस्थित और संशोधित करने में पर्याप्त श्रम किया। मैं उन मित्रों की सद्भावनाओं के प्रति आदर तथा परिजनों के सहयोग के लिए अपना स्नेह व्यक्त करता हूँ।

मेरे ज्ञान और साधनों की अपनी सीमाएँ हैं इसमें कई त्रुटियाँ होंगी। फिर भी आल्हा सम्बन्धी उपलब्ध प्राचीनतम कृति 'वीर विलास' सम्पादित कर विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करने में मैं संतोष, हर्ष और गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। पूरा विश्वास है कि साहित्य जगत इसे स्वीकार करेगा। यदि विद्वान मेरी त्रुटियों से मुझे अवगत करायेंगे तो अनुग्रहीत होऊँगा क्योंकि उससे मेरा मार्ग प्रशस्त होगा।

बसन्त पंचमी-सम्वत् 2048

12-एम. आई. जी.
हाउसिंग बोर्ड कालोनी
छतरपुर (म० प्र०)

—डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंयां'

नाम : डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

जन्म : 6 फरवरी 1937 को, भौंरी, जिला बांदा, (उ०प्र०)

शिक्षा : एम०ए० (हिन्दी) प्रथम श्रेणी, जबलपुर विश्वविद्यालय से 1964 में, पी-एच०डी०

प्रकाशित कृतियाँ :

1. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार 2. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार; 3. आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति; 4. हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार; 5. बुंदेली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (सम्पादित); 6. मानसमनीषी (सम्पादित); 7. समवाय (सम्पादित); 8. विंध्या लोक (सम्पादित); 9. अरमान वर पाने का; 10. प्रभो मुझे बीमार कर दो; 11. कर्म और आराधना; 12. रचना से रचना तक; 13. हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामाचरित (सम्पादित); 14. एकांकी संकलन (सम्पादित); 15. लगभग 200 निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

नवज्योति, संज्ञा तथा बंधु पत्रिकाओं का सम्पादन।

विशेष : उपराष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा द्वारा अ०भा० भाषा साहित्य सम्मेलन के 'साहित्यश्री' अलंकार से सम्मानित।

सम्प्रति : शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, महाराजपुर, छतरपुर (म०प्र०) में प्राचार्य के पद पर।